स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में महाभारत का मिथक

सं० डॉ० शैलजा भारद्वाज

ISBN No. : 978-81-88571-98-7

पुस्तक : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में महाभारत का मिथक

सम्पादिका : शैलजा भारद्वाज

प्रकाशक : चिंतन प्रकाशन
3ए/119, आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर-208 021

संस्करण : प्रथम, 2015

मूल्य : रु० 700.00

शब्दसज्जा : विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, बसन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर

Swatantryottar Hindi Sahitya Me Mahabharat Ka Mithak

By : Ed. Shailja Bhardwaj

Price : Rs. Seven Hundred Only

46

समकालीन संदर्भ एवं महाभारत

आधुनिक संदर्भ का अभिप्राय जानने से पूर्व हमें यह समझ लेना चाहिए कि मिथक क्या है? अथवा मिथक किसे कहते हैं? मिथक शब्द माइथोलॉजी से आया है जिसका अर्थ होता है 'पौराणिक कथा'। मिथक लोक विश्वास पर आधारित होता है जैसे- 'हनुमान जी की पूँछ में आग लगना' पूरी लंका जल गयी किन्तु पूँछ नहीं जली तो ये लोक विश्वास है। इस प्रकार मिथक में तार्किकता नहीं होती, हर मिथक में सार्वभौम संदेश होता है जब मिथक की बात चल रही है तो मुझे डॉ. शंम्भूनाथ सिंह जी के स्फुरित शब्द याद आ रहे हैं। डॉ. शंम्भूनाथ जी मिथक का अर्थ समझाते हुए कहते हैं कि "इस जमाने में मिथक पर सोचना बड़ा कठिन है। क्या धर्म है और क्या अधर्म है? ये समझना बड़ा मुश्किल है। आज के इस युग में मिथकों का आधुनिकीकरण हुआ है। शंम्भूनाथ जी के शब्दों में पहले मिथक धर्म से गुजरा, फिर विज्ञान से और फिर बाजार से।"

आधुनिकता से अभिप्राय जिसमें कवि समसामयिक जीवन में व्याप्त प्रश्निल स्थितियों, दारुण यंत्रणाओं, विवश जीवन, अभिशप्त व्यक्तित्व और अस्तित्व के प्रति खतरे का अनुभव करता हुआ संकट के उस क्षण पर अपनी उपस्थिति बताता है जहाँ जीवन निस्सार, बोझिल, अकेला और विवशता का पर्याय बन गया है।

नरो वा कुंजरो वा में प्रतीक योजना

डॉ. किशोर काबरा द्वारा लिखित 'नरो वा कुंजरो वा' खण्डकाव्य अर्धसत्य पर टिके हुए द्रोणाचार्य के जीवन दर्शन की वह प्रतीक कथा है जो दूध के मुहाने से आरम्भ होकर रक्त के महासागर पर समाप्त होती है। विपन्नताग्रस्त द्रोणाचार्य ने विवशतापूर्ण जिस अश्वत्थामा को बचपन में दूध के नाम पर आटा घोल कर पिलाया था उसी अश्वत्थामा के लिए दूध की व्यवस्था में वे जीवन भर अपनी साँसें नमक के भाव बेचते रहे और जैसे उन्होंने सुना कि अश्वत्थामा मारा गया वैसे ही कटे धान की तरह धरती पर बिखर गये। जैसे- "लहर की चोट खाकर, एक मछली दूर जाकर गिरी हो।"

वे पूरा वाक्य भी नहीं सुन पाए कि जो अश्वत्थामा मारा गया वो नर था या कुंजर।

द्रोणाचार्य - कवि ने द्रोण को मकड़े के रूप में, अभिमन्यु को कुँवारे फूल के

रूप में और मारने वाले छः दुष्टों को भँवरों के रूप में चित्रित किया है -

"एक मकड़े ने कुँवारे फूल पर दो दिन हुए हैं,
चक्र के आकार का जाला बुना ऐसा,
कि बेचारा उलझ कर रह गया।
सब पी गये मकरंद,
धोखे से दबोचा और फिर ऐसा झिंझोड़ा,
फूल थोड़ा लड़खड़ाया
डाल से टूटा नदी में बह गया।
बाग में यह बात कुछ ऐसी फैली,
एक अंधड़ आ गया गाण्डीव
पंख टूटे जयद्रथों के
शीश फूटे कुछ गदाओं से,
भँवरे हवाओं में बिखर कर रह गये
सब स्वप्न मकड़ी के सिहर कर रह गए।"

एकलव्य, द्रौपदी, अभिमन्यु और अश्वत्थामा द्रोण की हठधर्मिता और अहंमन्यता के कारण इन चार निरअपराध व्यक्तियों को जो सहना पड़ा है वह अश्रुविगलित मानवीय वेदना और विडम्बना का लंबा शोक गीत है।

अभिमन्यु - अभिमन्यु नियति के रहस्यों का चक्रभेदन करने वाली हमारी ज्ञान विज्ञान की साधना के अधूरेपन का प्रतीक है।

एकलव्य - एकलव्य जिज्ञासु छात्रों, दलित शूद्रों, उपेक्षित गिरिजनों, पतित अन्यजनों एवं शोषित जनसमूहों की सहनशीलता का पूँजीभूत प्रतीक है।

द्रौपदी - 'नरो वा कुंजरो वा' खण्ड काव्य में द्रौपदी एक लाचार बेबस नारी के रूप में सामने आती है। आग की धूम्राच्छादित लपट है एक स्त्री, या फिर पुरुष से तृप्त न होने वाली हमारी अपूरित वासना का प्रतीक है भरी सभा में दु:शासन द्वारा नंगी की जाने वाली भूखी बेबस एवं पीड़ित जनता का करुण चीत्कार है, बिखरे हुए नारी का मौन हाहाकार है।

अश्वत्थामा - लक्ष्यहीन, कुंठाग्रस्त, किंकर्तव्यविमूढ़ किन्तु संकल्पों-विकल्पों में उलझे, कभी न मरने वाले, शापग्रस्त-बुद्धिजीवियों का प्रतीक है। ब्राह्मणत्व को वह सँभाल न सका, क्षत्रियत्व को वह पा न सका। अश्वत्थामा द्रोण के अर्धसत्य का बेडौल चित्र है। खण्डित प्रतिमा है।

नरेन्द्र शर्मा कृत द्रौपदी लघुखण्ड काव्य में प्रतीक योजना

द्रौपदी - द्रौपदी खण्ड काव्य में द्रौपदी युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इन पाँच तत्वों को जोड़ने वाली शक्ति का प्रतीक है। कविवर नरेन्द्र शर्मा ने द्रौपदी को व्यापक भूमिका में प्रस्तुत किया है। उनकी द्रौपदी न केवल पाण्डव पुत्रों की बहू है

और न केवल कर्म पथ पर प्रवृत्त करने वाली नारी है अपित, जीवन शक्ति का शाश्वत प्रतीक है जो अनादिकाल से इस सृष्टि यज्ञ में विश्वात्मा रूप में पुरुष शक्ति की मधुर गूँज भरती आयी है।

रामधारी सिंह दिनकर कृत रश्मिरथी खण्ड काव्य में प्रतीक योजना

कर्ण – कर्ण उपेक्षित वर्ग और दलितों का प्रतीक है। वीर योद्धा और सभी शस्त्रों में पारंगत होने के बावजूद उससे भरे मैदान में उसकी जाति पूछी जाती है तब कर्ण करारा जबाव देता हुआ कहता है –

"जाति ! हाय री जाति ! कर्ण का हृदय क्षोभ से डोला,
कुपित सूर्य की ओर देख वह वीर क्रोध से बोला,
'जाति-जाति रटते, जिनकी पूँजी केवल पाषंड,
मैं क्या जानूँ जाति ? जाति हैं ये मेरे भुजदंड।"

कर्ण अर्जुन को भी ललकार कर कहता है –

अर्जुन बड़ा वीर क्षत्रिय है तो वह आगे आवे,
क्षत्रियत्व का तेज जरा मुझको भी तो दिखलावे,
अभी छीन इस राजपुत्र के कर से तीर-कमान,
अपनी महा जाति की दूँगा मैं तुमको पहचान,

आधुनिक संदर्भ

द्रोण की मूर्च्छता के प्रहर में कवि डॉ॰ किशोर काबरा ने समय के न्यायालय की कल्पना की है। समय के देवता न्यायालय में बैठे हैं। द्रोण अपराधी की तरह कटघरे में खड़े हैं। इतिहास द्रोण पर कई आक्षेप लगाता है और समर्थन में चार गवाहों को उपस्थित करता है। गवाह हैं – एकलव्य, द्रौपदी, अभिमन्यु और अश्वत्थामा।

एकलव्य – "गुरुवर आपने अपने द्वेष और अर्जुन के अहं की पूर्ति के लिए कर्ण को उपेक्षित रखा और बिना एक अक्षर पढ़ाए गुरु दक्षिणा में मुझसे अँगूठा माँग लिया। आपने अँगूठा क्या माँगा मेरी सारी उपलब्धियों को रक्त के सागर में डुबो दिया। शूद्रों के साथ सवर्णों ने यही किया है। "उन्हें कुछ मत दो बल्कि उनके पास जो कुछ है, छीन लो।"

"गुरुवर क्या माता-पिता चुनने का अधिकार हमें हैं ?"

वर्ण-व्यवस्था जन्मता है या कर्मणा ? मैं चाहे क्षमा कर दूँ पर मेरी भक्त पीढ़ियाँ क्या आपको क्षमा कर पायेंगी ? शिष्यों की आस्था आप पर थूकेगी। मेरी क्रुद्ध पीढ़ियाँ सवर्णो से सब अधिकार छीन लेंगी और सिंहासनों पर आरूढ़ हो जायेंगी। अब शिष्य अँगूठे दिखायेंगे, गुरुजनों को धमकायेंगे, गुरुकुल को आग लगायेंगे।

द्रौपदी – गुरुवर रहना सावधान ! अब पुरुष मात्र से बदला लेने द्वापर की द्रौपदी आ रही है कल युग में। द्वापर में तुम एक द्रौपदी को भरी सभा में बचा न पाए, कलियुग में अब द्रौपदियों पर सबकी आँख गड़ी रहेगी। द्वापर में दु:शासन द्वारा जिन द्रौपदियों के चीर हरण हुए थे, कलियुग में बिन वस्त्र राजपथों पर खड़ी रहेंगी। द्वापर की

द्रौपदी पाँच पतियों में बँटकर टूट गयी थी, कलियुग की द्रौपदी सौ पुरुषों से जुड़ जायेगी। द्वापर की द्रौपदी भरी सभा में दाँव पर रखी गयी थी, कलियुग की द्रौपदी दाँव की ओर खुद मुड़ जायेगी। द्वापर की द्रौपदी आज तक कुँवारी कन्या कहलाती है, कलियुग की द्रौपदियाँ कुँवारी ही माता बन जायेंगी। द्वापर की द्रौपदी महाभारत की मात्र कहानी होगी, कलियुग की द्रौपदियाँ घर-घर की गाथाएँ बन जायेंगी।

द्रौपदी का एक-एक शब्द सत्य की कसौटी पर खरा उतर रहा है। आज की नारी सुरक्षित नहीं है। उस पर समाज का वासना लोलुप पुरुष आँख गढ़ाए बैठा है कि कब मौका पाकर अपनी वासना की तृप्ति कर ले। दु:शासन कल भी थे और आज भी हैं। आज नारी किसी एक पुरुष से संबंध रखने में संतुष्ट नहीं होती और विवाह से पहले माता बन जाना, ये तो कलियुग का फैशन बन गया है।

अभिमन्यु - गुरुवर! मैंने तो आपका कुछ नहीं बिगाड़ा फिर धोखे से हत्या क्यों? आपने जो जहरीले बीज बोये हैं उसकी फसल अगली पीढ़ियों को काटनी पड़ेगी। द्वापर का अभिमन्यु तो मर गया पर कलियुग में मुझ जैसी अधूरी जानकारी रखने वाले व्यूहों में फँस जायेंगे। ग्रह युद्ध होंगे, विश्व युद्ध होंगे, आयुद्धों के नाम पर अन्तिम अभिमन्यु के पास टूटे पहिये और खण्डित मूठ के सिवाय कुछ नहीं बचेगा।

कलियुग में हम सिवाय छल और कपट के कुछ नहीं पाते। भाई-भाई को छल से लूट रहा है, संतान माता-पिता से छल कर रही है। कलियुग हजारों झूठ पर टिका हुआ है। यहाँ सत्य और विश्वास खण्डित हो चुका है।

अश्वत्थामा - "अगर पिता जी नहीं द्रुपद के यहाँ हाथ फैलाने जाते / अपमानित हो नहीं वहाँ से घर पर आते / तो जीवन का मधुमास ही और होता / उस दिन भारत का इतिहास और ही होता / उस दिन से मैं अश्वत्थामा नहीं / आपका अर्ध सत्य हूँ/ दिशाहीन खण्डित सर्जन का ..."

कर्ण - (रश्मिरथी) - जाति-पाँत ऊँच-नीच भेदभाव अनादिकाल से चला आ रहा है। कलियुग में भी इतना परिवर्तन और क्रान्ति के पश्चात् भी नीची जाति के लोगों को हीन दृष्टि से देखा जाता है, चाहे वह कितना भी बुद्धिमान, गुणकारी और बलशाली क्यों न हो? उच्च जाति में केवल जन्म लेना ही सम्मान और गर्व की बात है तभी तो रश्मिरथी का कर्ण कहता है -

"कौन जन्म लेता किस कुल में? आकमिक ही है यह बात,
छोटे कुल पर किन्तु यहाँ होते तब भी कितने आघात,
हाय ! जाति छोटी है, तो फिर सभी हमारे गुण छोटे,
जाति बड़ी, तो बड़े बने, वे रहें लाख चाहे खोटे।"

द्रौपदी (द्रौपदी लघु खण्ड काव्य) - अनादिकाल से नारी नर की मर्यादा रही है। नर ने जब जब नारी की मर्यादा तोड़ी तब तब भयानक सर्वनाश हुआ है। रावण ने मर्यादा तोड़कर पृथ्वी पुत्री सीता का अपहरण किया तो सोने की लंका राख हो गयी। द्रौपदी के अपमान और लांछना के परिणाम स्वरूप कौरवों का भयानक सर्वनाश हुआ।

कवि नरेन्द्र शर्मा ने नारी को नर की शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। कलियुग में नारी नर की पहचान बनी है। द्रौपदी सतानत जीवन शक्ति है। कलियुग में नारी नर का कल्याण रूप बनी है –

"नारी कृत्या, मृत्यु, उर्वशी,
जननी, जाया, माया,
क्षीर सिन्धु-धारिणी, तारिणी,
महाशून्य की काया,
ऋतानृता चिद अचिद – शक्ति वह,
नीरा – नाल – कमलिनी,
वह हरिण्य गर्भा है, जिसमें,
सब ब्रह्माण्ड समाया।"

सन्दर्भ

1. डॉ. किशोर काबरा कृत खण्ड काव्य 'नरो वा कुजरो वा' एक अनुशीलन (शोध प्रपत्र से उद्धृत)
2. द्रौपदी लघु खण्ड काव्य, नरेन्द्र शर्मा
3. रश्मिरथी खण्ड काव्य, रामधारी सिंह दिनकर

– शगुफ्ता नूर अंसारी
म० स० विश्वविद्यालय
बड़ौदा

●●